The Other Lucknow

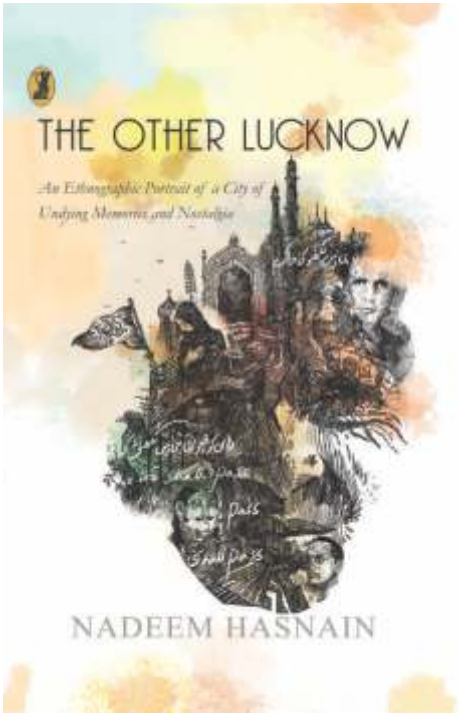

There are few cities in the world that evoke the same nostalgia among its inhabitants, visitors and historians as Lucknow. Perhaps, Delhi and Calcutta are the only two cities in South Asia on which more has been written. In the case of Lucknow, most of the published scholarship focused on 1857, historical monuments and the Nawabi palace life and culture. This fascination with the Nawabi era is largely responsible for the neglect of various other aspects of Lucknow such as its social fabric (castes, sects, occupational groups and communities), the subaltern and the marginalised sections of the society, problems and plight of the artisans, Sunni-Shia violence, local landmarks, vanishin/dying skills, its Bollywood connection, people from outside the state of Uttar Pradesh who have made Lucknow their home and have enriched it, several other issues and the virtual metamorphosis of Lucknow. This study is an attempt to grapple with the present but not severing ties with the past because the wholesale loss of memory makes a city characterless.

The present study maintains that the nostalgia and the undying memories must be there in the face of modernization. In the process of transformation, Lucknow should not be allowed to become a 'city of amnesia'. There has to be a closer association between the 'tradition' and the 'modernity'. In a way, this study may also be seen as an 'ethnographic portrait' of Lucknow in the tone and tenor of 'auto ethnography'.

The Other Lucknow
Nadeem Hasnain
ISBN : 978-93-5229- 420-6
Price : ₹ 795
Number of Pages : 344
Size : 6.50" x 9.50"
Publisher : Vani Prakashan, Delhi
Publication Year : 2016

Nadeem Hasnain

Nadeem Hasnain is a social scientist with a broad range of interests. Formerly, a Professor of Social Anthropology at the University of Lucknow, India, he has been a Fulbright 'Scholar in Residence' and taught and lectured at several universities in the USA. Among his important works are *Bonded For Ever, Tribal India* and *Indian Society and Culture: Continuity and Change*. He is also the editor of two research journals- *The Eastern Anthropologist* and *Islam and Muslim Societies: A Social Science Journal*.

A teacher, researcher, and social activist, he is currently a Senior Fellow, Indian Council of Social Science Research.

रामायण (विनय-खण्ड)

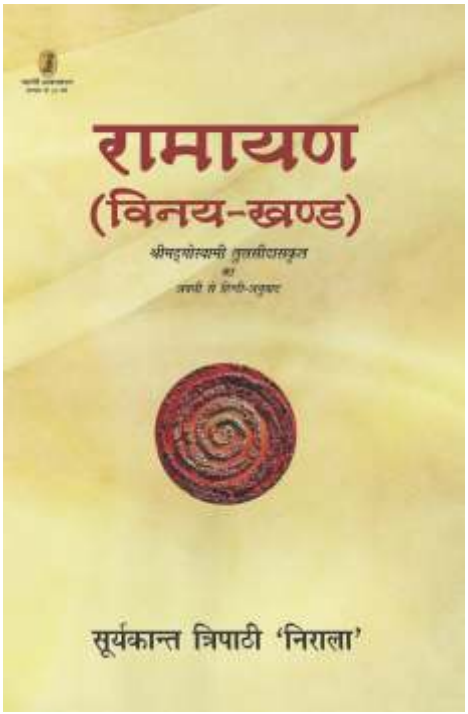

रामायण (विनय-खण्ड)
सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'
ISBN : 978-93-5229-482-4
मूल्य : ₹ 295
पृष्ठ संख्या : 148
साइज : 6.50" x 9.50"
प्रकाशक : वाणी प्रकाशन, दिल्ली
प्रकाशन वर्ष : 2016

प्रस्तुत पुस्तक को मूल रचना का अनुवाद नहीं कहा जा सकता क्योंकि शब्द-रचना का मौलिक ढाँचा गोस्वामी जी का ही है। फिर भी खड़ी बोली के अधिक अनुकूल होने से वह मूल रचना से भिन्न भी है। उसकी सफलता की कसौटी एक स्वतन्त्र अनुवाद की नहीं है; उसकी सफलता को आँकने का एकमात्र उपाय यही है कि हम देखें कि उसे पढ़ने के बाद हम गोस्वामी तुलसीदास के अधिक निकट पहुँचे अथवा नहीं। इस तरह यह रामचरितमानस तक पहुँचने के लिए ऊँची-नीची धरती पर रचे हुए एक नये मार्ग के समान है।

कहना न होगा कि यह कार्य बहुत ही कठिन था, सहसा किसी में उसे उठा लेने का साहस भी न होगा। किन्तु यदि कोई कवि इस युग में उसे पूरा करने के योग्य था, तो वह निराला जी ही हैं। उन्होंने गोस्वामी जी की कृतियों का कितना गम्भीर अध्ययन किया है, यह बात अब किसी से छिपी नहीं है। अपने साहित्यिक जीवन के आरम्भकाल में ही—'समन्वय' पत्र के सम्पादक होने के समय उन्होंने रामचरितमानस के सातों काण्डों की मौलिक व्याख्या करते हुए कई निबन्ध लिखे थे। 'तुलसीदास' नाम के काव्य-खण्ड में उन्होंने अनेक वर्षों के अध्ययन और मनन के आधार पर गोस्वामी जी की काव्य-प्रतिभा के जागरण और उनके युग के संघर्ष का अद्वितीय चित्र उपस्थित किया है। स्वयं निराला जी की काव्य-रचना पर गोस्वामी जी की कृतियों का बहुत बड़ा प्रभाव पड़ा है। यह प्रभाव भावों और विचारों के अलावा उनके कला-प्रसाधन पर भी पड़ा है— छन्द-रचना, ध्वनि के आवर्तों आदि पर। विरोधी आलोचकों ने बंगला और अँग्रेज़ी कवियों का प्रभाव जाँचने में जितनी तत्परता दिखाई है, उतनी घर के ही कवियों का वास्तविक प्रभाव देखने में नहीं। वे तो निराला के 'विदेशीपन' के पीछे पड़े थे; साहित्य परम्परा के विकास से उन्हें क्या मतलब था? लेकिन देखिये, किस कौशल से 'छन्द' के ध्वनि आवर्तों को निराला जी ने 'मुक्त छन्द' में बिठा दिया है।

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' (21 फरवरी 1896-15 अक्टूबर 1961) का नाम मूलतः छायावाद से जोड़ा जाता है, किन्तु उनके कृतित्व और व्यक्तित्व ने समूची सदी के साहित्य परिदृश्य को प्रभावित किया है। बंगाल के महिषादल में उनका जन्म हुआ और अवध प्रदेश के बैसवाड़ा अंचल में उनके जीवन का अधिकांश समय बीता। उनके कृतित्व में इन दोनों साहित्य-संस्कृतियों के गहरे रंग उभरकर सामने आते हैं। एक ओर उन पर तुलसीदास का गहरा रंग है, तो दूसरी ओर रामकृष्ण परमहंस, विवेकानन्द और रवीन्द्रनाथ ठाकुर का। वे वेदान्त दर्शन से गहरे तक प्रभावित थे और राष्ट्रीय चेतना और यथार्थवादी दृष्टि में उनका अगाध विश्वास था।

प्रमुख कृतियाँ : राम की शक्ति-पूजा, तुलसीदास, सरोज स्मृति, कुकुरमुत्ता, अनामिका, अणिमा, नये पत्ते, बेला (काव्य); अप्सरा, निरुपमा, प्रभावती, कुल्ली भाट, बिल्लेसुर बकरिहा (उपन्यास); चतुरी चमार, सुकुल की बीवी (कहानी संग्रह); रवीन्द्र कविता कानन, चाबुक, प्रबन्ध पराग (निबन्ध तथा आलोचना)।

फैजाबाद : सांस्कृतिक गजेटियर

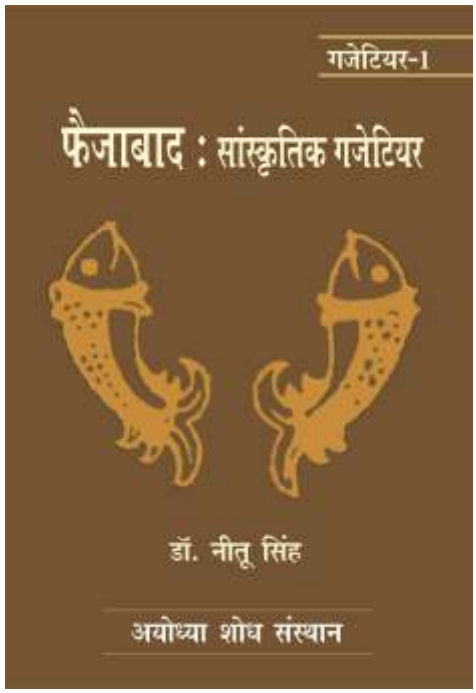

इस पुस्तक का लेखन 'अवध की सांस्कृतिक विरासत शोध परियोजना' के अन्तर्गत किया गया है। फैजाबाद, अवध के नवाब-वजीरों की पहली राजधानी थी। यही कारण है कि शोध परियोजना के प्रथम चरण में फैजाबाद जनपद की सास्कृतिक विरासत के विविध पक्षों पर क्षेत्रीय कार्य के द्वारा तथ्य संकलन व लेखन किया गया है।

इसके साथ-साथ अवध व अवधी का क्षेत्र-विस्तार, फैजाबाद के प्रागैतिहासिक, ऐतिहासिक, भौगोलिक, जनांकिकी व प्रशासनिक पक्षों तथा जनपद की सीमाओं में परिवर्तन का विस्तृत वर्णन लाइब्रेरी में उपलब्ध सामग्री, राजस्व अनुभाग के शासनादेशों व 2011 की जनगणना पर आधारित है। अन्य प्रशासनिक तथ्य जिला अधिकारी कार्यालय से उपलब्ध अभिलेखों पर आधारित है। जबकि लोक संस्कृति के मूर्त एवं अमूर्त पक्षों पर तथ्य संकलन क्षेत्रीय अध्ययन के आधार पर किया गया है। क्षेत्रीय अध्ययन हेतु फैजाबाद के सभी ग्यारह विकासखण्डों में से सत्रह ग्रामों का चयन किया गया है। प्रत्येक ग्राम में वरिष्ठ नागरिक, कलाकार, वरिष्ठ महिलाएँ, हेडमास्टर व ग्राम प्रधान से व्यक्तिगत साक्षात्कार, समूह चर्चा के साथ-साथ अवलोकन व व्यवस्थित डायरी इत्यादि से तथ्य संकलन किया गया है।

फैजाबाद : सांस्कृतिक गजेटियर
डॉ. नीतू सिंह
साइज : 6.50" x 9.50"
प्रकाशक : वाणी प्रकाशन, दिल्ली
प्रकाशन वर्ष : 2016

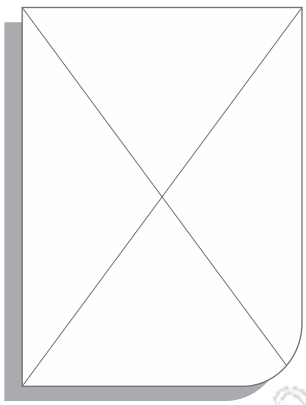

डॉ. नीतू सिंह

हरदोई : सांस्कृतिक गजेटियर

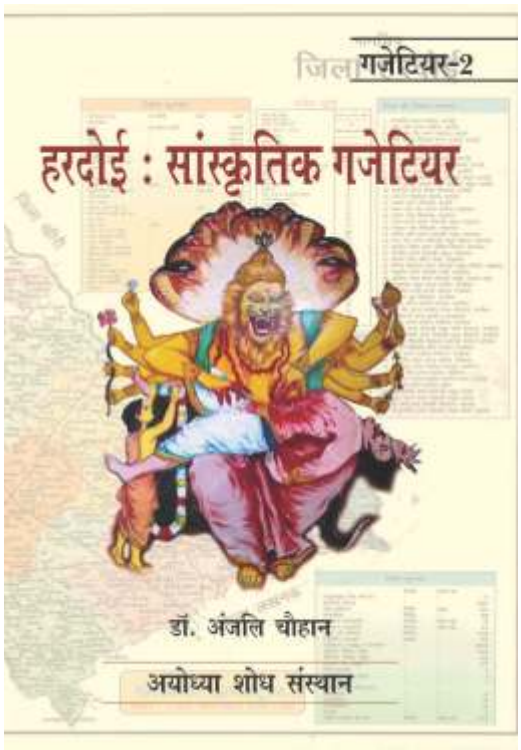

हरदोई : सांस्कृतिक गजेटियर
डॉ. अंजलि चौहान
साइज : 6.50" x 9.50"
प्रकाशक : वाणी प्रकाशन, दिल्ली
प्रकाशन वर्ष : 2016

अवध प्रान्त के सीमांकन को लेकर भिन्न विचारधाराएँ हैं। कुछ विद्वान इसे एक भौगोलिक क्षेत्र के रूप में देखते हैं तो दूसरी ओर भाषाविदों के अनुसार यह वह क्षेत्र है जहाँ अवधी भाषा बोली जाती है। इस प्रान्त को ऐतिहासिक सन्दर्भ में देखा जाए तो अलग-अलग कालखण्ड में इसकी सीमाएँ एवं राजधानी परिवर्तित होती रही। दूसरी ओर इस प्रान्त में स्थित हरदोई जिले को कुछ लोग अवध में रखते हैं तो कुछ इसे अलग मानते है फिलहाल वर्तमान प्रशासनिक ढाँचे के अनुसार यह जिला अवध का ही भाग है। इस जिले की मूल जानकारी खोजने पर वर्तमान समय में भी दो-तीन सन्दर्भ ग्रन्थ उपलब्ध हैं। एक तो अंग्रेजों द्वारा लिखा गया यूनाइटेड प्राविन्स का गैजेटियर जो एक विदेशी कृति थी। दूसरा बघेल जी द्वारा लिखित और हाल में ही अमिय कृष्ण चतुर्वेदी (आई.ए.एस.) ने इसकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर काम किया। तत्पश्चात उन्होंने क्षेत्रीय अधिकारियों एवं लोगों के सहयोग से लोकगीतों का संकलन भी किया।

इनके अतिरिक्त हरदोई पर कोई विशिष्ट पुस्तक या ग्रन्थ उपलब्ध नहीं है जो कि किसी स्वदेशी शिक्षाविद् ने लिखा हो। एक मानव शास्त्री के तौर पर मैंने इसका नृजाति वृत्तान्त प्रस्तावित किया जिसमें मानव शास्त्र की अनुसन्धान पद्धति—क्षेत्रीय अध्ययन प्रणाली का प्रयोग किया गया। इसके लिए 19 गाँवों का चुनाव किया गया। प्रत्येक गाँव में अनेक साक्षात्कार और वैयक्तिक अध्ययन किये गये तथा सम्बन्धित सरकारी विभागों से प्रश्नावली के माध्यम से जानकारी एकत्र की गयी। इस पद्धति के प्रयोग से हमने हरदोई की मौलिक संस्कृति को समझने का प्रयास किया है। विभिन्न शासनकाल में कैसे इस संस्कृति पर प्रभाव पड़ा और समय-समय पर उसमें परिमार्जन और नवीनीकरण को भी जानने का प्रयास किया गया है।

डॉ. अंजलि चौहान

डॉ. अंजलि चौहान, श्री जय नारायण पी.जी. कॉलेज (लखनऊ) विश्वविद्यालय) में असिस्टेंट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष मानवशास्त्र विभाग में 2001 से कार्यरत हैं। उन्होंने जातीय तथा विकलांग जनों पर, जन-जातीय क्षेत्रों के सामाजिक-सांस्कृतिक पक्ष पर तथा धार्मिक विषयों पर 14 शोध पत्र प्रकाशित किये हैं तथा 2 पुस्तकें भी लिखी हैं। उन्होंने विश्व के छः देशों में अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलनों में व्याख्यान दिये हैं। उन्हें संस्कृति विभाग भारत सरकार से जूनियर फेलोशिप मिली है तथा उन्होंने यू.जी.सी. व अयोध्या शोध संस्थान, संस्कृति विभाग (उ.प्र.) की 2 शोध परियोजनाएँ पूर्ण की हैं।

'रामचरितमानस'
की लोकप्रियता का विवेचनात्मक अध्ययन

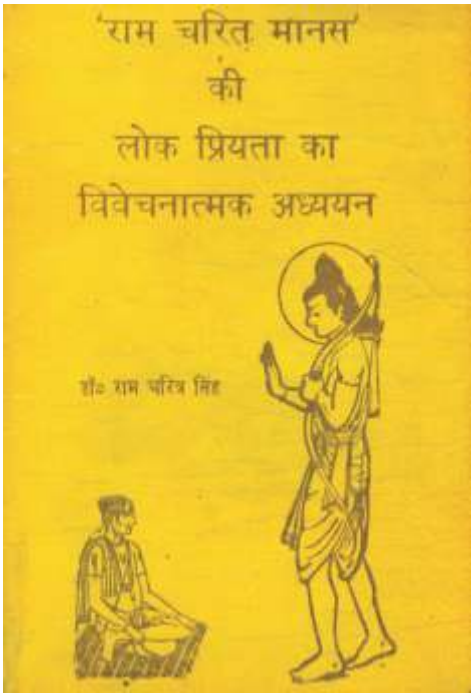

भारतीय साहित्य में तुलसी कृत रामचरितमानस का शीर्ष स्थान है, मर्यादा पुरुषोत्तम राम के चरित्र को लेकर वैसे तो बहुत कुछ लिख गया है और आज भी लिखा जा रहा है, किन्तु समाज और सम्पूर्ण राष्ट्र की चेतना को प्रभावित करने की जो क्षमता रामचरितमानस में है अन्यत्र दुर्लभ है।

'रामचरितमानस' की लोकप्रियता का विवेचनात्मक अध्ययन
डॉ. रामचरित्र सिंह
मूल्य : ₹ 125
पृष्ठ संख्या : 106
साइज : 5.5" x 8.5"
प्रकाशक : प्रयाग प्रकाशन, इलाहाबाद
प्रकाशन वर्ष : 1998

डॉ. रामचरित्र सिंह

पिता : श्री बैजनाथ सिंह

ग्राम : तरसावाँ (रतनपुर), फैजाबाद (उ.प्र.)

शिक्षा : गाँव की प्रायमरी पाठशाला से शिक्षा प्रारम्भ।
उच्च शिक्षा इलाहाबाद विश्वविद्यालय, डॉ. शंभुनाथ सिंह के निर्देशन में काशी विद्यापीठ से पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की।
आचार्य (साहित्य) सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वबिद्यालय वाराणसी, डी.लिट्. (शोध) अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद।

रामप्रियाशरण कृत सीतायन

एक अध्ययन

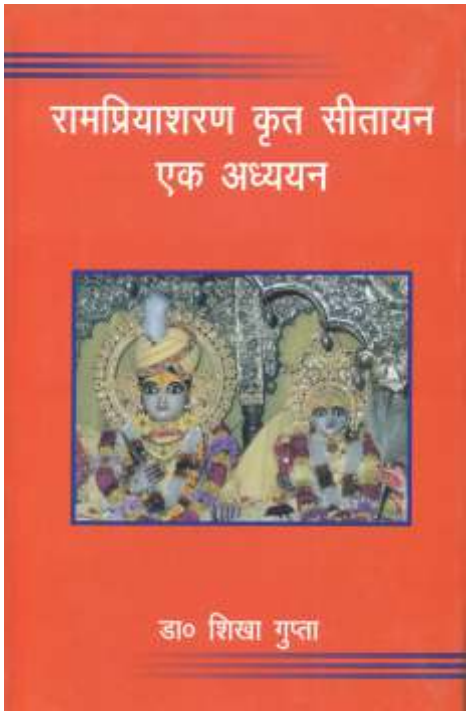

रसिकोपासना पर आधारित हिन्दी राम काव्य की परम्परा में श्री रामप्रियाशरण का नाम अविस्मरणीय है। रसिक भक्ति से परिपूर्ण 'सीतायन' महाग्रन्थ इन्हीं महाकवि की महत्त्वपूर्ण रचना है। रसिक परम्परा के अनुसार कवि ने इस स्थूल शरीर सम्बन्धी सभी बातों को गुप्त रखा है। ग्रन्थ में कवि-भाव सम्बन्धी शरीर का उल्लेख मिलता है। कवि की गुरु-चरणों में अपार निष्ठा थी तथा प्रिया-प्रीतम श्री सीताराम जी के चरणों की अहर्निश सेवा करने की प्रबल भावना थी। सीतायन महाकाव्य कवि की इसी भावना का व्यक्तरूप है। इस ग्रंथ में श्रीसीता जी की महत्ता का विशद वर्णन किया गया है।

रामप्रियाशरण कृत सीतायन : एक अध्ययन
डॉ. शिखा गुप्ता
मूल्य : ₹ 300
पृष्ठ संख्या : 380
साइज : 5.5" x 8.5"
प्रकाशक : भारतीय पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, फैजाबाद
प्रकाशन वर्ष : 2002

डॉ. शिखा गुप्ता

डॉ. शिखा गुप्ता की सम्पूर्ण शिक्षा उ.प्र. के जनपद बहराइच में सम्पन्न हुई। बाल्यकाल से ही आप मेधावी छात्रा रही हैं। स्वाध्यायी और धार्मिक अभिरुचि होने के साथ-साथ भारतीय संस्कृति के प्रति आपकी गहरी निष्ठा है।

प्रस्तुत ग्रन्थ 'रामप्रियाशरण कृत सीतायन : एक अध्ययन' पर आपको डॉ. राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद (उ.प्र.) से पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त हुई है। वर्तमान में आप कानपुर में निवास करती हैं।

सम्पर्क : यशोदा नगर, कानपुर (उ.प्र.)

तुलसी के हनुमान

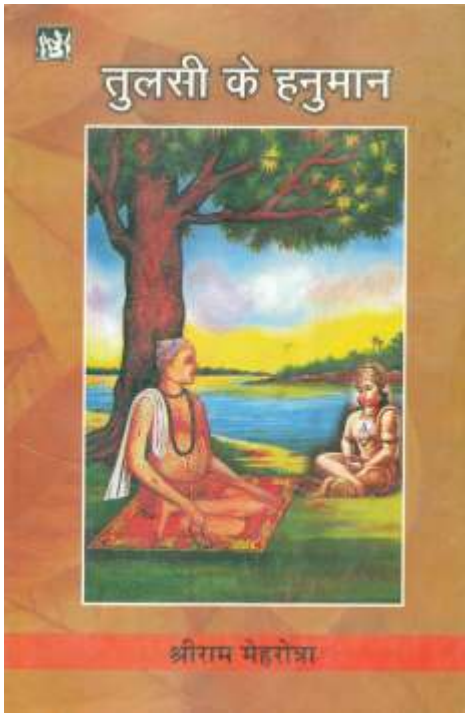

महाकवि गोस्वामी तुलसीदास काव्य-जगत् के निर्विवाद साहित्य सम्राट हैं, यह सत्य है किन्तु कवि होते हुए उनके अद्वितीय जुझारू समाजसेवी व्यक्तित्व का विस्तार से प्रकाशन हो तो उन्हें साहित्य-सम्राट जैसी की एक और उपाधि देने में संकोच नहीं होगा। 'रा' और 'म' दो अक्षर मात्र पर 'रामबोला' ने बारह आर्ष ग्रन्थों की रचना देश की परम राजनीतिक-सामाजिक उथल-पुथल की विषमता में की। लेखन कार्य सुरक्षित बन्द कोठरियों में किया किन्तु अपनों और गैरों के धार्मिक मदान्धता के संकटों में खुले मैदानों में अखाड़ची ताल की ठोक में अकेले चलते हुए महाबीर जी के नगर भर में एक-दो नहीं, बारह विग्रहों की स्थापना को कवि का असाधारण साहस कहना गलत नहीं होगा। अपने महान वैभव और अस्मिता को भूली वीर वसुन्धरा की 'अमृतस्य पुत्रः' जाति को फिर से जगाने के समाजकाज के लिए रामकाज करने वाले बल, बुद्धि, विद्या, युक्ति, शक्ति के धनी हनुमान की मूर्ति-प्रतिष्ठा का तुलसीदास ने क्रान्तिकारी कार्य किया। आज इसका कोई स्पष्ट अभिलेख उपलब्ध नहीं है कि ये स्थापनाएँ कहाँ-कहाँ हैं। तुलसीदास जी द्वारा स्थापित बारह अखाड़ों में आज मात्र दो शेष हैं। सम्भवतः राजमन्दिर से उन्होंने पहला रामलीला मंचन आरम्भ किया था जो आज धनाभाव के कारण बन्द है। उस लीला मंचन के भवन अभी तीन वर्ष पूर्व तक जीवित अवशेष थे जिन पर अब किसी का कब्जा है। ये पुरातात्त्विक अवशेष राष्ट्र की धरोहर हैं। इस पुस्तक के माध्यम से लेखक ने समाज और सरकार दोनों को इन्हें संरक्षित रखने का आह्वान किया है।

तुलसी के हनुमान
श्रीराम मेहरोत्रा
ISBN : 978-81-8031-935-8
मूल्य : ₹ 600
पृष्ठ संख्या : 164
साइज : 6.25" x 9.5"
प्रकाशक : लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
प्रकाशन वर्ष : 2014

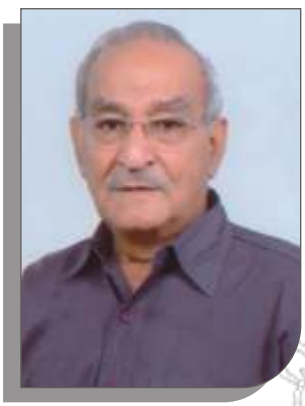

श्रीराम मेहरोत्रा

जन्म : आशुतोष शिव की नगरी काशी में वर्ष 1942

रचनाधर्मिता : काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से हिन्दी साहित्य तथा काशी विद्यापीठ से समाजशास्त्र विषयों में स्नातकोत्तर श्री मेहरोत्रा का अपना अलग साहित्यिक रचनाधर्मी संसार रहा। पेशे से बैंकिंग उद्योग में प्रबन्धकीय पदों पर कार्य करते हुए साहित्य, समाज और प्रागैतिहासिक चरित्रों को परखने का उनका स्वतन्त्र नजरिया है। परम्परा से कुछ अलग नवोन्मेषी दृष्टिकोण से महान राम के इतिहास और चरित्रों पर प्रभूत लेखन-व्याख्यान के साथ *'राम कौन?'* एक भिन्न वैचारिक पुस्तक है। *'राम इतिहास के अपरिचित अध्याय'* प्रकाशन की प्रतीक्षा में है। मध्य प्रदेश सरकार के *'राम वनगमन पथ शोध आयोग'* के विशेषज्ञ सलाहकार हैं। *छत्तीसगढ़ अस्मिता संस्थान,* रायपुर द्वारा राम के दण्डकारण्य प्रवास के विषय के विशेषज्ञ सलाहकार। पूर्व में श्री मेहरोत्रा काशी नागरी प्रचारिणी सभा से दस खण्डों में प्रकाशित *'बृहत् हिन्दी शब्दसागर'* में सहायक सम्पादक। *'साहित्य का समाजशास्त्रः मान्यता और स्थापना'* पुस्तक उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा सन् 1974 में नकद पुरस्कार से पुरस्कृत। सन् 1998 में *'राजभाषा शब्द संसार'* प्रकाशित। *'नाट्य रंगमंच का समाजशास्त्रीय अध्ययन'* प्रकाशनाधीन।

सम्पर्क : रामराज्य, 1/141 विराम खण्ड, गोमतीनगर, लखनऊ-226010

अयोध्या केन्द्रित रामभक्ति धारा का संगीत पक्ष

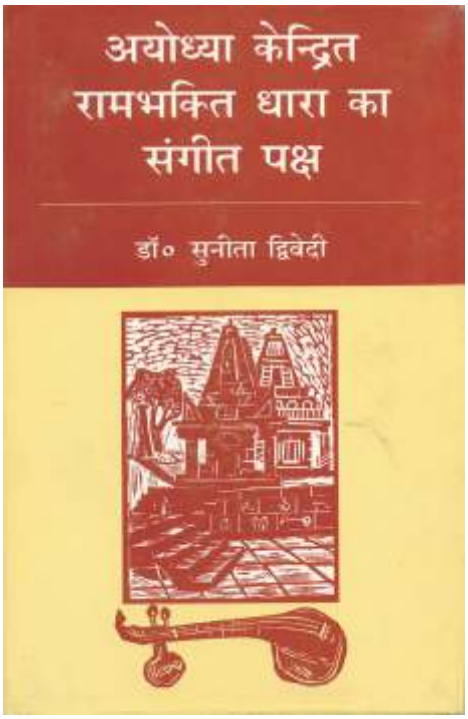

धर्म-साधना के अन्तर्गत संगीत किसी-न-किसी रूप में सदा से विद्यमान रहा है। भारतीय धर्म-साधना में भी यह तथ्य स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। साधना का स्वरूप सुगणोपासना हो अथवा निर्गुणोपासना, संगीत किसी-न-किसी रूप में विद्यमान रहता है। अन्ततः यह तथ्य उद्घाटित हुआ कि भक्ति-साधना की इस धारा में संगीत तो है किन्तु उसकी कोई विशिष्ट विधा और परम्परा नहीं है अपितु आंचलिक संगीत और शास्त्रीय संगीत का एक अद्भुत सम्मिश्रण है। विद्वानों और अनुसन्धानकर्ताओं को इस ग्रन्थ से नवीन तथ्य एवं नयी दृष्टि प्राप्त होगी।

अयोध्या केन्द्रित रामभक्ति धारा का संगीत पक्ष
डॉ. सुनीता द्विवेदी
मूल्य : ₹210
पृष्ठ संख्या : 212
साइज : 5.75" x 8.75"
प्रकाशक : भारती पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, फैजाबाद
प्रकाशन वर्ष : 2002

डॉ. सुनीता द्विवेदी

जन्म : 16 जून 1966

शिक्षा : दयानन्द गर्ल्स कॉलेज कानपुर से स्नातकोत्तर शिक्षा प्राप्त करने के उपरान्त सन् 1988 में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की नेट परीक्षा उत्तीर्ण की।

सम्प्रति : उ.प्र. उच्चतर शिक्षा सेवा आयोग द्वारा चयनित होकर कानपुर के जुहारीदेवी गर्ल्स पी.जी. कॉलेज में संगीत प्रवक्ता के पद पर कार्यरत हैं।

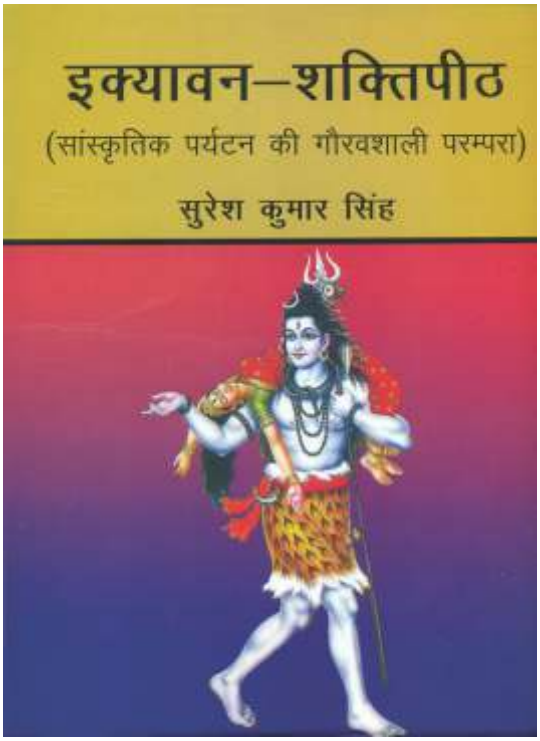

इक्यावन-शक्तिपीठ

(सांस्कृतिक पर्यटन की गौरवशाली परम्परा)

कर्तव्य निर्वहन हेतु प्रशासनिक सेवा में बड़े और गैर-जरूरी योगदान को शायद श्री एस.के. सिंह उतना रेखांकनीय नहीं मानते हैं, क्योंकि रेखांकनीय होता है किसी विचार को जन्म देना या किसी विचार को स्वरूप देना। श्री सिंह ने इक्यावन-शक्तिपीठ पुस्तक पर लेखन के अनुष्ठान से कुछ नये विचारों को स्वरूप देने तथा कुछ नयी स्थापनाओं के संकेत दिये हैं। इन्होंने यह पुस्तक लिखकर इक्यावन-शक्तिपीठ के माणिक से धूल हटाकर उसे उपादेय बनाया है। इसे शब्द की माला पहनाकर शक्तिपीठ के इस संज्ञान से इस सम्बन्ध में आसपास के सारे कुहासे को इस पुस्तक के लेखन ने तिरोहित कर दिया है।

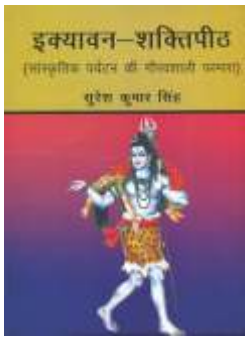

मूल्य : ₹ 3.00

इक्यावन-शक्तिपीठ
सुरेश कुमार सिंह
ISBN : 978-93-50500-52-1
मूल्य : ₹ 895
पृष्ठ संख्या : 120
साइज : 9.00” x 11.25”
प्रकाशक : बी.आर. पब्लिशिंग कार्पोरेशन
प्रकाशन वर्ष : 2012

सुरेश कुमार सिंह

सुरेश कुमार सिंह

जन्म : 02 मार्च, 1958 को प्रयागराज अन्तर्गत ग्रामीण अंचल में ग्राम सोनाई में एक कृषक परिवार में हुआ। आप धर्म परायण पिता श्री गुलाब सिंह एवं माता श्रीमती रामकली देवी की द्वितीय सन्तान हैं। आपने माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उ.प्र. से हाईस्कूल एवं इंटरमीडिएट की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। स्नातक एवं स्नातकोत्तर (प्राचीन इतिहास) की उपाधि इलाहाबाद विश्वविद्यालय से प्रथम श्रेणी में प्राप्त की।

सम्प्रति : सचिव, लोकसेवा आयोग, उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद

अवध में
श्रीराम भक्ति आन्दोलन
का विकास

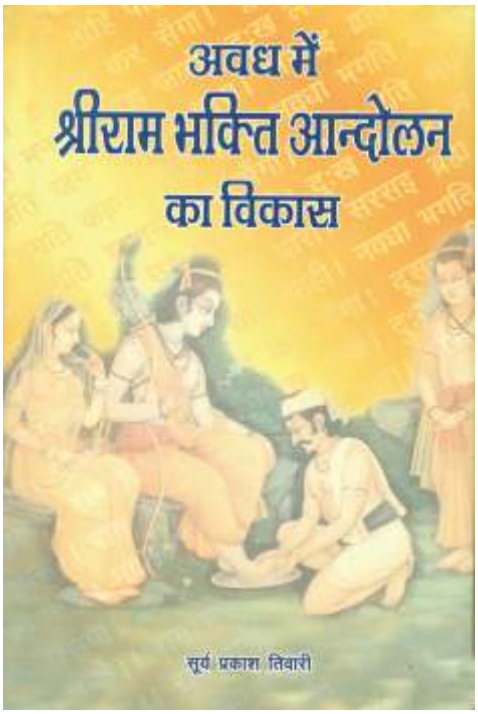

'अवध में श्रीराम भक्ति आन्दोलन का विकास' पुस्तक में अवध क्षेत्र की विभिन्न परम्पराओं, धार्मिकस्थलों, सांस्कृतिक कार्यक्रमों, अनेक सम्प्रदायों तथा भक्ति-आन्दोलनों का विस्तृत विवेचन प्रस्तुत किया गया है।

श्रीमद्भागवत के वर्णन—'उत्पन्ना द्राविड़े साहं वृद्धिं कर्णाटके गता' के अनुसार भक्ति द्रविड़ देश में उत्पन्न होकर कर्नाटक में वृद्धि को प्राप्त हुई। इससे सिद्ध होता है कि भक्ति का उद्भव दक्षिण भारत में होकर वहीं से उत्तर भारत में विकसित हुई। प्रस्तुत ग्रन्थ में भक्ति आन्दोलन के क्रमिक विकास को दर्शाते हुए अवध क्षेत्र में श्रीराम भक्ति के आन्दोलन के विकास को सविस्तर प्रतिपादित किया गया है। आशा है मौलिक एवं नूतन तथ्यों पर आधारित इस ग्रन्थ से भक्ति आन्दोलन के अध्येताओं के साथ-साथ सामान्य पाठकों को भी रुचिकर सामग्री प्राप्त होगी।

अवध में श्रीराम भक्ति आन्दोलन का इतिहास
सम्पादक : सूर्य प्रकाश तिवारी
ISBN : 978-81-7702-172-9
मूल्य : ₹ 350
पृष्ठ संख्या : 298
साइज : 5.5" x 8.5"
प्रकाशक : प्रतिभा प्रकाशन, दिल्ली
प्रकाशन वर्ष : 2008

सूर्य प्रकाश तिवारी

नाम : सूर्य प्रकाश तिवारी
जन्म तिथि : 27 अप्रैल 1976
पिता का नाम : श्री पारसनाथ तिवारी (भू.पू. प्रधानाचार्य)
माता का नाम : (स्व.) श्रीमती राजपती तिवारी
ग्राम : नरायनपुर तिवारी
पोस्ट : महराजगंज
जनपद : बस्ती (उ.प्र.)
शिक्षा : एम. ए., एम. लिब्., पीएच. डी.
सम्प्रति : प्रवक्ता इतिहास विभाग,चौधरी चरण सिंह पी.जी. कॉलेज, पद्मापुर, बस्ती।

मध्ययुगीन उत्तर भारत में
रामकथा चित्रावली

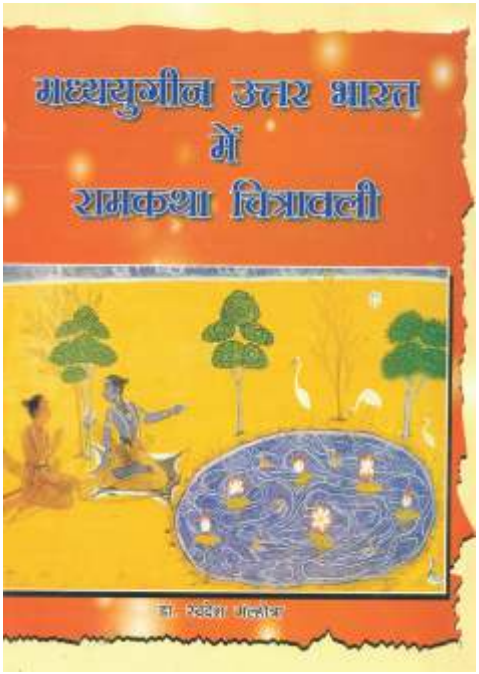

मध्ययुग में श्रीराम की विभिन्न लीलाओं को देश के विभिन्न चित्रकारों द्वारा चित्रित किया गया यहाँ तक कि मुगल शासकों के संरक्षण में भी रामकथा को चित्रित कराया गया और उनके संरक्षण में इस कार्य ने बहुत अधिक गति प्राप्त की तथा बिना किसी भेद-भाव और बिना किसी जातिगत वैमनस्य के कलाकारों ने रामकथा के विभिन्न प्रसंगों को चित्रित किया, जो वस्तुतः प्रसन्नता का विषय है। समाज में फैली विद्वेष की अग्नि को एकता की रंगमयी कूची से शान्त किया जा सकता है और चित्रकला के माध्यम से जन-जन की सोच को परिष्कृत किया जा सकता है।

मध्ययुगीन उत्तर भारत में रामकथा चित्रावली
डॉ. स्वदेश मल्होत्रा
मूल्य : ₹ 700
पृष्ठ संख्या : 140
साइज : 8.5" x 11.25"
प्रकाशक : भारती पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, फैजाबाद
प्रकाशन वर्ष : 2003

डॉ. स्वदेश मल्होत्रा

जन्म : उत्तर प्रदेश के जनपद फैजाबाद में हुआ।

शिक्षा : पीएच.डी.।

सम्प्रति : राजकीय कॉलेज नवाबगंज, गोण्डा (उ.प्र.) में चित्रकला प्रवक्ता के पद पर कार्यरत हैं।

गोस्वामी तुलसीदास कृत

रामाज्ञा प्रश्न

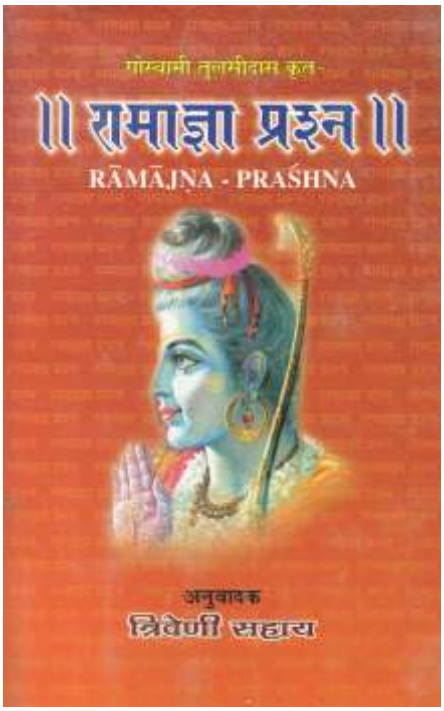

श्री त्रिवेणी सहाय श्रीवास्तव ने हिन्दी तथा अंग्रेजी भाषा पर पूर्ण अधिकार रखते हुए जो अनुवाद किया है वह अनुवाद मात्र न होकर तुलसी के मौलिक ग्रन्थ सा प्रतीत होता है। 'रामचरितमानस' के विभिन्न भाषाओं में अनुवाद होने के कारण 'तुलसी' की विचारधारा को अन्य भाषा-भाषी विदेशी भी जान सके हैं तथा उनके विचारों से लाभ उठा रहे हैं। प्रस्तुत अनुवाद ज्योतिष शास्त्र से सम्बन्धित है, अहिन्दी भाषा-भाषी विदेशियों को भी तुलसी की रामभक्ति की भावना से ओतप्रोत करेगा ही, साथ ही फलित ज्योतिष के विषय में उनकी जिज्ञासा का समाधान करेगा।

रामाज्ञा प्रश्न
अनुवादक : त्रिवेणी सहाय
ISBN : 81-88216-24-0
मूल्य : ₹ 100
पृष्ठ संख्या : 104
साइज : 5.5" x 8.75"
प्रकाशक : राका प्रकाशन, इलाहाबाद
प्रकाशन वर्ष : 2005

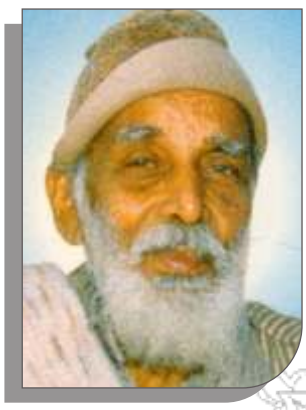

त्रिवेणी सहाय

Sri Triveni Sahai
Born : 17.06.1916
Died : 02.09.2002

Late Shri Triveni Sahai ji was born on 17th June, 1916. He was a guzzeted officer. He was a man of various activities and learned man. He also participated in the Freedom Struggle and was a great patriot. In 1942 he worked as a Sub-Editor in the Urdu edition of "Harizan", newspaper which was published by Mahatma Gandhi at Vardha in Ahmedabad. In 1957 a book of short stories named "Banphool" was published and written by him. He wrote many articles and poems which were published in various newspaper and magazines.

वाल्मीकि रामायण

के चयनित शत श्लोकों का हिन्दी गद्य-पद्य रूपान्तर

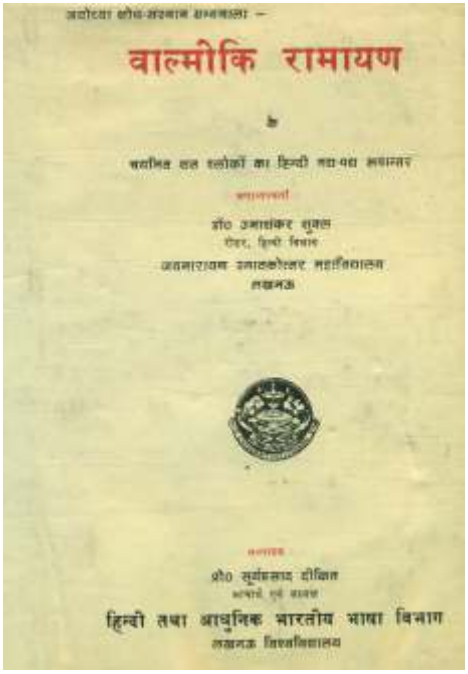

वाल्मीकि रामायण विश्व साहित्य का प्रस्थान ग्रन्थ है। सहज असाधारण विशेषताओं से सम्पन्न होने के कारण इसे अमर लोकप्रियता प्राप्त है। सन्तों ने तो इसे साक्षात 'श्रीराम तनु' स्वीकारा है। इसमें से चयनित शत-श्लोक अवधपुरी वर्णन, ऋतु वर्णन तथा सुभाषितपरक हैं, जिनमें अयोध्या नगरी के ऐश्वर्य-विस्तार, सूक्ष्म प्रकृति-निरूपण एवं बिम्बाधायिनी काव्यकला के उत्कर्ष-प्रकर्ष के साथ ही जीवन के ऐसे अनगिन सूत्र प्रकीर्ण हैं जो आज के ह्रासोन्मुख जीवन को विपथित होने से बचाने तथा उसके उन्नयन का निर्देशन करने में सक्षम हैं। हिन्दी गद्य-पद्य रूपान्तरण से मूल संस्कृत श्लोकों को हिन्दी प्रेमियों के लिए सुबोध और मनोरम बनाने का यह लघु उपक्रम है।

वाल्मीकि रामायण
के चयनित शतश्लोकों का हिन्दी गद्य-पद्य रूपान्तर
सम्पादक : डॉ. सूर्यप्रसाद दीक्षित
मूल्य : ₹ 30
पृष्ठ संख्या : 24
साइज : 7" x 9.25"
प्रकाशक : वि.वि. हिन्दी प्रकाशन, लखनऊ
प्रकाशन वर्ष : 1995

डॉ. सूर्यप्रसाद दीक्षित

जन्म : 06 जुलाई, 1938, बन्नावाँ, रायबरेली (उत्तर प्रदेश)
प्रोफेसर तथा पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय

संस्थापक अध्यक्ष : पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय। अतिथि प्रोफेसर, लखनऊ, इलाहाबाद, सागर, बड़ौदा, उज्जैन, गोवा, कोचीन, वर्धा, दिल्ली विश्वविद्यालय

शोध : (1) 'छायावादी गद्य' (पीएच.डी.), (2) 'व्यावहारिक सौन्दर्यशास्त्र' (डी.लिट्.)

सम्पादन : 'उत्कर्ष', 'उद्भव', 'अवधी', 'ज्ञानशिखा', 'शोध', 'कुलसन्देश', 'साहित्य भारती', 'संचारश्री, 'चाणक्य', 'प्रभास', 'खोज'

स्नेहोपहार : 'उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान' से 'साहित्य भूषण' सम्मान, 1998; 'दीनदयाल उपाध्याय सम्मान', उ.प्र. , 2002; हिन्दी साहित्य सम्मेलन से 'साहित्य वाचस्पति' उपाधि 1999; इण्टरनेशनल सेण्टर, कैम्ब्रिज से 'इण्टरनेशनल मैन ऑफ दी इयर' 1998 से 2013; 'अमेरिकन इंस्टीट्यूट' से 'डिसटिंगिस्ट परसनालिटी ऑफ दी वर्ड' 1998 से 2013

सम्पर्क : 'साहित्यिकी' डी-54, निरालानगर, लखनऊ-226020

वैदिक समाज

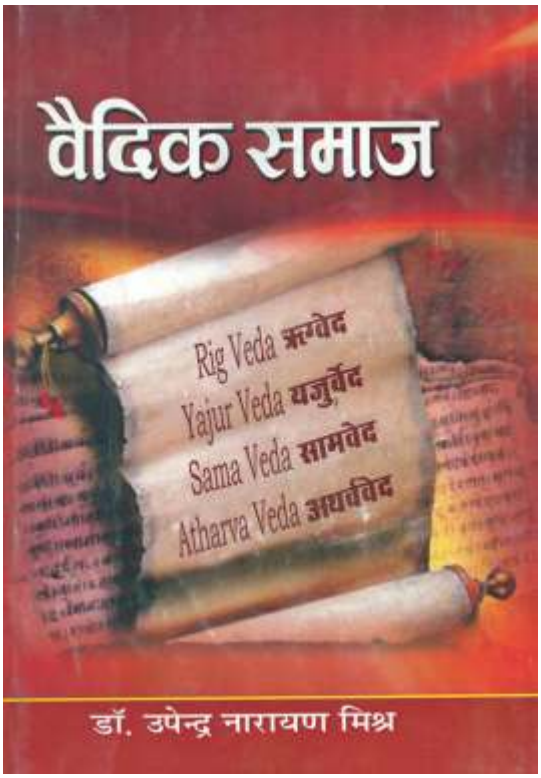

प्रस्तुत पुस्तक में पाँच अध्याय हैं। प्रथम अध्याय में वैदिक संहिता साहित्य, ब्राह्मण साहित्य, आरण्यक साहित्य, वेदांग साहित्य तथा सूत्र साहित्य का उल्लेख है। द्वितीय अध्याय में वैदिककालीन समाज, विवाह प्रथा, वर्ण व्यवस्था, नारी की स्थिति, शिक्षा वस्त्र आदि का अध्ययन किया गया है। तृतीय अध्याय में वैदिक कालीन आर्थिक जीवन कृषि-कर्म, अनाज, सिंचाई, पशुपालन का विवेचन है। चतुर्थ अध्याय में वैदिक धर्म, वैदिक देवता का स्वरूप, देवों की संख्या, वेद में अद्वैत तत्व, पृथ्वी, अन्तरिक्ष एवं आकाश के देवता का वर्णन है। पंचम अध्याय में वैदिक कालीन ऋषियों एवं उनके आश्रमों तथा वैदिक आचार्यों का विशद् वर्णन है।

वैदिक समाज
डॉ. उपेन्द्र नारायण मिश्र
ISBN : 978-81-928210--09
मूल्य : ₹ 720
पृष्ठ संख्या : 204
साइज : 5.5" x 8.75"
प्रकाशक : प्रांजल पब्लिसिटी एंड पब्लिकेशन
प्रकाशन वर्ष : 2012

अयोध्या एवं निकटवर्ती क्षेत्रों में

लोकनाट्य नकटौरा

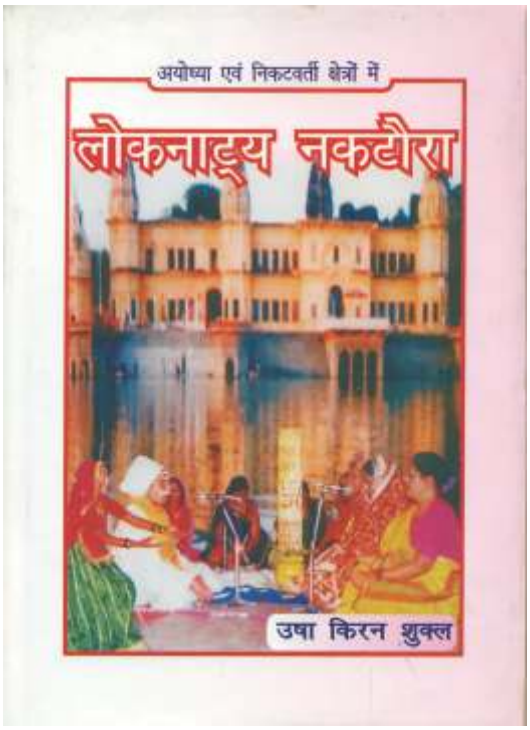

नकटौरा, ग्रामीण महिलाओं के अन्तःपुर में आयोजित की जाने वाली मनोरंजन की एक विशेष शैली है, जिसे हम पारिवारिक लोकनाट्य भी कह सकते हैं। इसमें उन्मुक्तता भी है और उल्लास भी तथा हँसी-खुशी के प्रदर्शन का विशेष भाव भी। इसमें विशेष रूप से अपनत्व और साहचर्य की भावना है, जो धीरे-धीरे आधुनिक विचारों में कम होती जा रही है। उत्तर भारत तथा मध्य भारत के इस लोकनाट्य नकटौरा की चर्चा साहित्य में कम ही हुई है। सम्भवतः लोकनाट्य के विद्वानों ने इसे ज्ञापित करने योग्य ही न समझा हो। कारण कुछ भी हो, परन्तु आनन्द और मनोरंजन पर सभी का अधिकार है और आवश्यकता है कि लोकनाट्य वेत्ताओं और शोधकर्त्ताओं का ध्यान इस विलुप्त होती हुई शैली पर दिलाया जाये ताकि भविष्य में अन्य शैलियों की भाँति ये शैली भी समाप्ति की ओर न जाकर खुली हवा में उन्मुक्तता से साँस ले सके। इस दिशा में लेखिका उषा किरन शुक्ल ने सार्थक पहल की है, जिसके लिए वह बधाई की पात्र हैं। शृंगार और हास्य प्रधान इस कला को बचाने का दायित्व मूल रूप से हम सबका है, क्योंकि यह हमारे देश की प्राचीन नाट्य कला है जिसे जीवित रखना हमारा कर्त्तव्य है।

लोकनाट्य नकटौरा
उषा किरन शुक्ल
ISBN : 978-81-910419-0-3
मूल्य : ₹ 175
पृष्ठ संख्या : 148
साइज : 6.5" x 9"
प्रकाशक : कोन्नोइस्सवुर, लखनऊ
प्रकाशन वर्ष : 2010

उषा किरन शुक्ल

शिक्षा : एम.ए. (समाजशास्त्र, हिन्दी)
बाल-साहित्य : चंदामामा, झुनझुना
कविता-संग्रह : एक टुकड़ा आकाश
कहानी-संग्रह : अँधेरे में पली धूप, शापमुक्ति
शोध-प्रबन्ध : अयोध्या की लोक-संस्कृति
रंगमंच : लोकनाट्य नकटौरा का विभिन्न प्रतिष्ठित मंचों पर प्रदर्शन
प्रसारण : पिछले तीस वर्षों से आकाशवाणी द्वारा रचनाओं का नियमित प्रसारण
सम्प्रति : अध्यापन
सम्पर्क : हरेवा शुक्ल, बाधानाला, बस्ती, उ.प्र.

वर्ष 2005 में यूनेस्को द्वारा घोषित विश्व विरासत
प्रदेश की गौरवशाली सांस्कृतिक परम्परा

जसवन्तनगर, इटावा की
मैदानी रामलीला

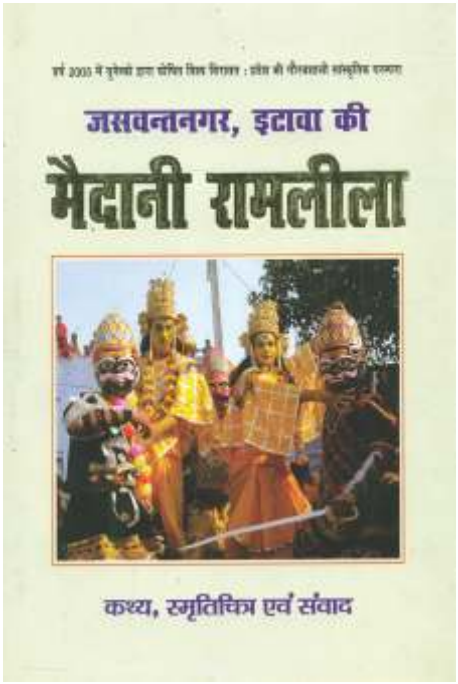

जसवंतनगर, इटावा की मैदानी रामलीला
सम्पादक : वेदव्रत गुप्ता
मूल्य : ₹ 650
पृष्ठ संख्या : 300
साइज : 7.25" x 9.75"
प्रकाशक : अयोध्या शोध संस्थान, फैजाबाद
प्रकाशन वर्ष : 2014

डेढ़ शताब्दी का इतिहास और गोरों की गुलामी का राज्य भोगने वाली जसवन्तनगर की रामलीला के बारे में बताया जाता है कि सन् 1855 में यह आरम्भ हुई थी। बताते हैं कि जसवन्तनगर स्टेट के जमींदार स्व. दुर्गाप्रसाद जी के परिवारी स्थानीय ब्राह्मणों के साथ रामनगर बनारस की रामलीला देखने गये हुए थे, वहाँ होने वाले कुश्ती दंगल में एक संगी ब्राह्मण ने कुश्ती जीती और इनाम में मुद्राएँ मिलीं, जिनसे कुछ रामलीला के पात्रों के मुखौटे खरीदकर लाये और जसवन्तनगर में रामलीला की नींव डाली।

शुरू के वर्षों में इटावा-आगरा राजमार्ग के किनारे रामेश्वर मन्दिर के किनारे सड़क पर रामलीला होती थी। बाद में जमींदार दुर्गा प्रसाद और शारदा प्रसाद रहीस ने रामेश्वर मन्दिर से 150 मीटर दूर नगर की आबादी के पास मैदान दान में दिया, जो आज रामलीला मैदान के नाम से प्रसिद्ध है। इसके पश्चिमी कोने पर विशाल पक्की पंचवटी जिसे अयोध्या कहा जाता है, निर्मित करायी गयी तथा पंचवटी से लगभग 150 मीटर दूर पूर्वी कोने पर लंका भवन का निर्माण कराया गया। पंचवटी और अयोध्या के बीच का 150 मीटर मैदान रामलीला का दर्शन हर वर्ष लोगों को कराता है।

जसवन्तनगर की रामलीला में स्थानीय स्टेट का शुरू से सहयोग रहा। अब से 30 वर्ष पूर्व तक आम लोगों से चंदा भी लिया जाता था। इससे पूर्व स्टेट खर्चा उठाती थी, साथ ही गल्ला मंडी के आढ़ती वर्ष भर किसानों के अनाज की बिक्री पर चौघर (टैक्स) काटते थे, जो रामलीला समिति को प्रदान किया जाता था, जिससे हर वर्ष रामलीला होती थी। बाद में खाली पड़े रहने वाले रामलीला मैदान पर बकरी बाजार की शुरुआत हुई, जिसको बाद में ठेका पर उठाया जाने लगा और रामलीला आयोजन के लिए आमदनी का जरिया बन गया। रामलीला मेला बाजार की दुकानों से किराया लेकर भी खर्च की राशि जुटती है। इधर पिछले 30 वर्षों से रामलीला महोत्सव से पूर्व गणेश शोभा यात्रा, रामबारात, शिव बारात निकालने की शुरुआत हुई। ये बारातें विभिन्न समितियों ने निकालनी शुरू कीं, जो आज रामलीला महोत्सव की परम्परा बन गयी।

वेदव्रत गुप्ता

वेदव्रत गुप्ता मूलतः विज्ञान के विद्यार्थी है। परन्तु लगभग 50 वर्ष से पत्रकारिता में सक्रिय है। सम्प्रति : प्रबन्धक, रणवीर सिंह, स्मृति सैफई महोत्सव समिति, इटावा, उत्तर प्रदेश।

इतिहास एवं पुरातत्व में अयोध्या का कनक भवन

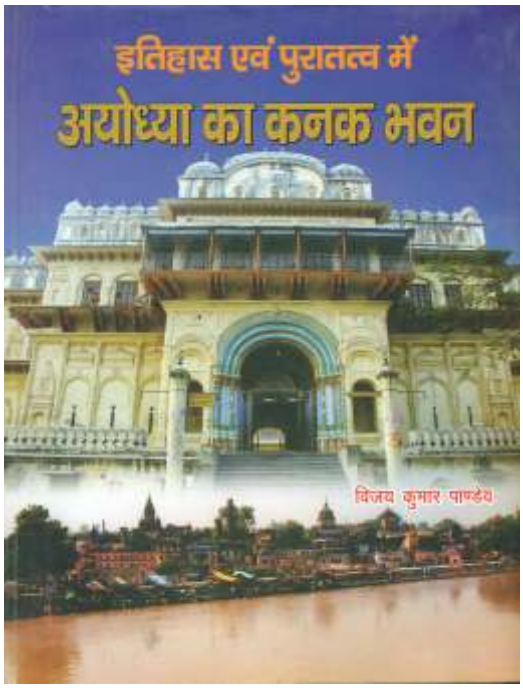

इतिहास एवं पुरातत्व में अयोध्या का कनक भवन ग्रन्थ अयोध्या में अवस्थित कनक भवन के ऐतिहासिक, स्थापत्य एवं धार्मिक पक्ष को प्रस्तुत करने वाला प्रथम ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ में कनक भवन के साथ-साथ अयोध्या के प्राचीन से लेकर अद्यतन इतिहास का विश्लेषण पुरातात्विक, साहित्यिक एवं धार्मिक, आभिलेखिक एवं जनश्रुतियों के आधार पर प्रस्तुत किया गया है। ग्रन्थ में मन्दिर के गर्भगृह में स्थापित सीताराम जी की युग्म चल एवं अचल प्रतिमाओं के परिधान एवं विशिष्ट अलंकरण आदि का विवेचन प्रथम बार किया गया है।

इतिहास एवं पुरातत्व में अयोध्या का कनक भवन
विजय कुमार पाण्डेय
ISBN : 978-81-7702-245-2
मूल्य : ₹ 600
पृष्ठ संख्या : 135
साइज : 8.75" x 11.25"
प्रकाशक : प्रतिभा प्रकाशन, दिल्ली
प्रकाशन वर्ष : 2011

विजय कुमार पाण्डेय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विषय में 34 वर्षों से अध्ययन एवं अनुसन्धान के प्रति समर्पित हैं। इनके द्वारा तीन ग्रन्थों एवं पचास से अधिक शोध लेखों का प्रकाशन किया गया।

सम्प्रति : डॉ. आर.एम. एल. अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद के इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग में 14 मई 1991 से कैडर पद पर प्रोफेसर एवं अध्यक्ष हैं।

अपराजिता

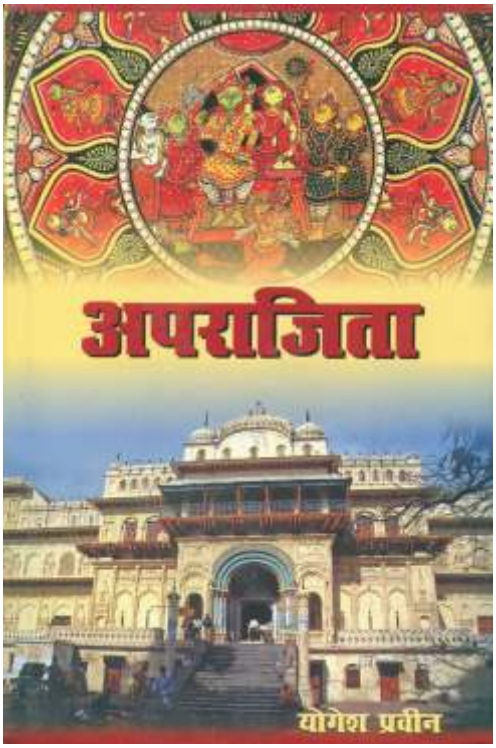

रामकथा का प्रचार जितना आज है उतना पहले कभी नहीं रहा। आज विदेशों में भी रामकथा का प्रचार जोरों पर है। राम हमारे भारत के प्राण हैं। बिना राम के भारतीय संस्कृति की कल्पना ही नहीं की जा सकती है। राम का चरित्र एक महामानव का चरित्र है जो जड़-चेतन में व्याप्त है और दलित, शोषित मानव जाति के लिए प्रकाश स्तम्भ की भाँति उसका मार्ग दर्शन करता है। 'अपराजिता' इसी प्रयास और प्रकाशन की एक महत्त्वपूर्ण कड़ी है, जिसके लेखक डॉ. योगेश प्रवीन हैं। वे एक लेखक और कवि के रूप में हिन्दी जगत में प्रख्यात हैं। अनेक प्रतिष्ठित सम्मान एवं श्रेष्ठ पुरस्कारों से विभूषित हैं। यहाँ लोक जीवन एवं समाज के अनेक मनमोहक चित्र अंकित कर कवि ने एक सराहनीय कार्य किया है। इसमें भाव निरनयन के साथ वैचारिकता का भी अद्भुत समावेश हुआ है। मुझे विश्वास है कि सुधी पाठकों को इस प्रचलित रामकथा वर्णन में कुछ न कुछ नया अवश्य मिलेगा।

अपराजिता
योगेश प्रवीन
मूल्य : ₹350
पृष्ठ संख्या : 198
साइज : 6" x 9"
प्रकाशक : नमन-नवीन प्रकाशन, लखनऊ

योगेश प्रवीन

जन्म : 28 अक्टूबर, 1938

भाषा ज्ञान : हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी, अवधी, बंगला

साहित्यिक गतिविधियाँ : हिन्दी गद्य एवं पद्य विधाओं में समान रूप से लेखन।

अवध संस्कृति एवं ऐतिहासिक परिवेश की विशिष्ट विद्वता।

भारतीय दर्शन में प्रवक्ता।

प्रकाशन : अवध सन्दर्भ में विशेष : लखनऊनामा (भारत सरकार द्वारा पुरस्कृत), दास्ताने लखनऊ, बहारे अवध, गुलिस्ताने अवध, साहबे आलम, डूबता अवध, मौन्यूमेण्ट्स ऑफ लखनऊ (अंग्रेजी), हिस्ट्री ऑफ लखनऊ कैण्ट (अंग्रेजी), आपका लखनऊ, लखनऊ की धरोहर, लक्ष्मणपुर की आत्मकथा।

दूरदर्शन (राष्ट्रीय कार्यक्रम के लिए) : फिल्म महक (इत्र उद्योग पर आधारित), टी.वी. सीरियल 'बीवी नातियों वाली' का शीर्षक गीत तथा रचनाएँ, स्नेह का सावन, महादेवी की काव्यधारा।

अनेक वृत्तचित्र : गीत और आलेखक, प्रसिद्ध वृत्तचित्र : बावन मछलियों का शहर, बद्रीनाथ धाम, अमर यादें, बारादरी, गुम्बद, चिकन, गुजरा हुआ जमाना। उत्तर प्रदेश के हस्तशिल्प, कहकहे, महकती महरावें, स्नेह का सावन, फुहार, रंगीला, ऋतुराज, गंगा गोमती, रंग बरस गुलेनारी, जन्माष्टमी सरस्वती में इंटरव्यू, कहानी कबूतर की। तमाम साक्षात्कार। अनेक दूरदर्शन फिल्म।

मानस के कथा-प्रसंग

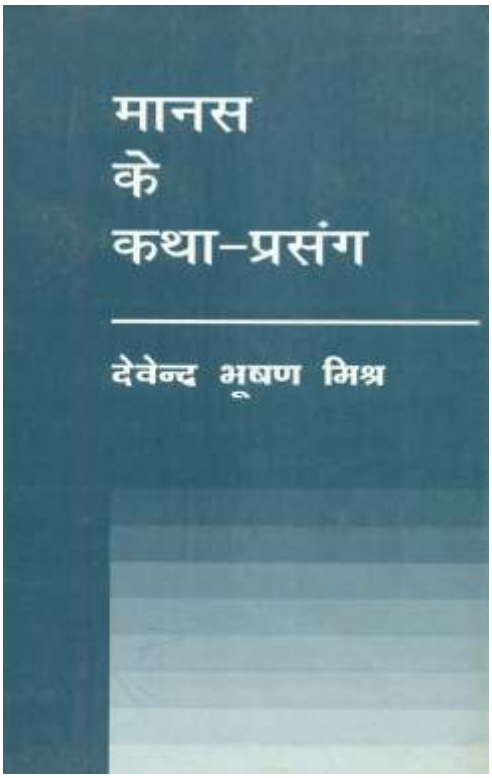

श्रीमद्गोस्वामी तुलसीदासजी विरचित श्रीरामचरितमानस हिन्दी साहित्य का एक अनुपम ग्रन्थ है। हिन्दी जानने और पढ़ने वाला कोई भी ऐसा व्यक्ति न होगा जो इससे परिचित न हो। यह कहना अतिशयोक्ति न होगा कि यह ग्रन्थ हिन्दी जगत का सर्वाधिक लोकप्रिय ग्रन्थ है। यद्यपि इसकी रचना को चार सौ वर्ष से अधिक हो गये हैं पर इसकी लोकप्रियता में कोई कमी नहीं हुई है।

इस पुस्तक में जिन कथाओं का संकलन किया गया है उन्हें उनके प्रामाणिक स्वरूप में प्रस्तुत करने के उद्देश्य से उनके मूल स्रोत से, यथा वाल्मीकीय रामायण, महाभारत और विभिन्न पुराणों आदि से लिया गया है। कभी-कभी यह देखा गया है कि एक कथा-विशेष कई पुराणों में मिलती है और विभिन्न पुराणों में उपलब्ध कथा के मूलतः समान होते हुए भी विस्तार में जाने पर उस कथा के विभिन्न स्वरूपों में कुछ भेद मिलता है। यही नहीं, कभी-कभी तो ऐसा भी देखा गया है कि एक ही पुराण के भिन्न-भिन्न प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित स्वरूपों में भी कुछ भिन्नता है। अतः यदि किसी पाठक को इस पुस्तक में दी गयी किसी कथा का कोई अन्य स्वरूप मिले तो यह कोई बड़े आश्चर्य की बात न होगी।

मानस के कथा-प्रसंग
देवेन्द्र भूषण मिश्र
मूल्य : ₹200
पृष्ठ संख्या : 222
साइज : 5.5" x 8.5"
प्रकाशक : परमार्थ प्रकाशन, लखनऊ
प्रकाशन वर्ष : 2000

देवेन्द्र भूषण मिश्र
सम्पर्क : भवन संख्या-37, सेक्टर-18, इन्दिरा नगर, लखनऊ-16

Raghuveera

A Global Journey of Ramayana

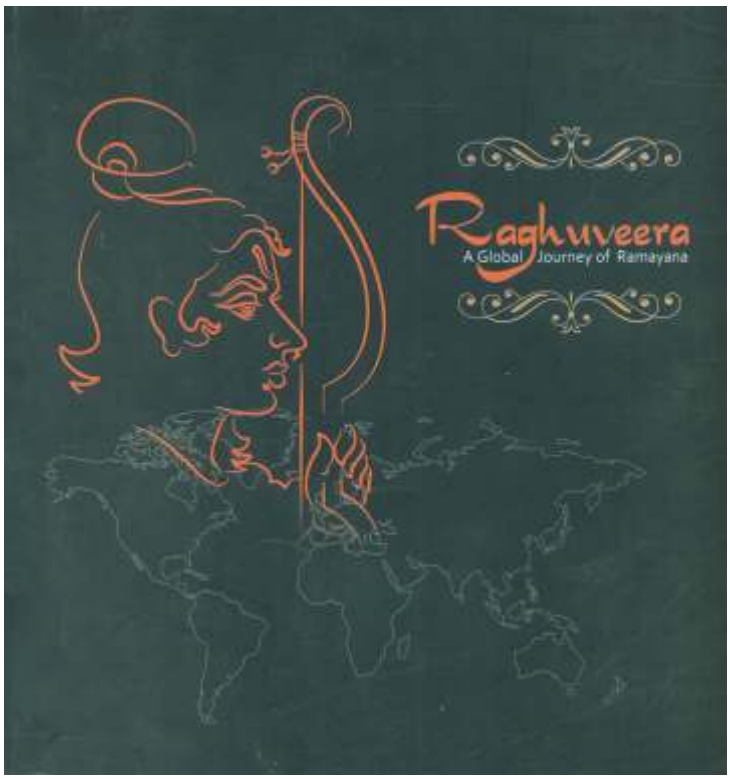

Raghuveera
A Global Journey of Ramayan
Published by Ayodhya Research Institute
Number of Pages : 98

Ramayana is one of the most ancient epic, among other epics of the world, which was written about 5000 years ago. The significance of this epic is not due to its literary form but also for different forms of Architecture, Sculpture, Picture, Music and Drama along with all other forms related to Fine Arts, which are available in most of the countries from ancient times,. And significantly it is included in the programmes and syllabus of Schools and Universities of different countries. The recital of Sundar Kand of Shri Ramcharitmanas is held on Tuesday and Saturday in most of the countries. The artistic journey of Ram Katha, originated from India, travels in South-East Asia, Central Asia, Europe, America, Caribbean Countries, Africa and Australia etc.

At present, the result of materialistic developments are very much visible. Deterioration of values and emergence of negative thoughts amongst the young people is a matter of serious worry. To overcome this threat, several efforts have been made, but in comparisons to those efforts the ideals, morals, ethical values set by Lord Rama may be more helpful. To visualize this situation in depth some countries have done remarkable efforts. Some Universities and Schools have added Ramkatha in the their syllabus and passed separate Act in their Parliament.

A synoptic view of this Global Journey of Ramayana is shown here through **'Raghuveera'**. If a cultural mapping of Ramayana be prepared, it will provide as new way to the cultural traditions in a scientific manner.

International Seminar on
The Cultural Linkage
between
Ayodhya - India
&
Ayutthaya - Thailand

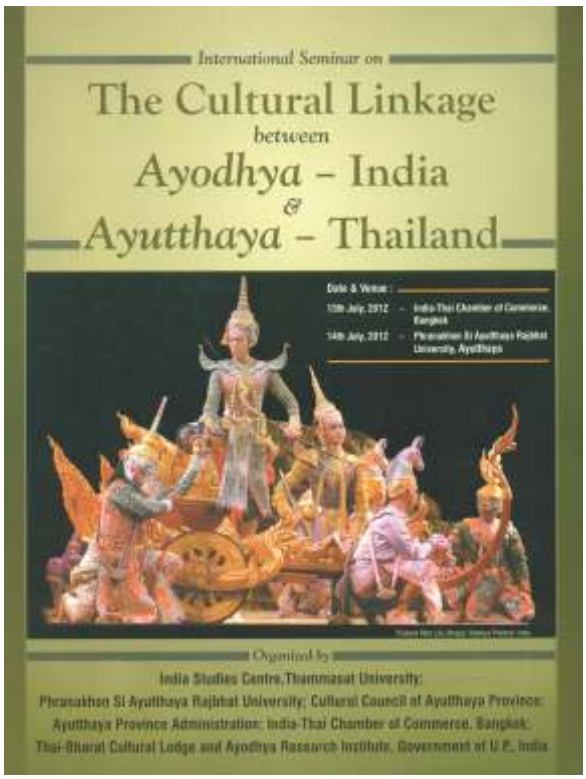

- Birth Place of Lord Ram.
- As described in Valmiki Ramayan there are about 280places that exists in India, confirmed the existance of Lord Ram.
- Detailed Research work done by Shri Ram Avtar Sharma, New Delhi.
- CDs & DVDs are available in Ayodhya Research Institute Ayodhya, Faizabad, U.P.
- There are 165 places that exists in Sri Lanka also, described in Valmiki Ramayan.

This Power Point Presentation by International seminar on The Culture Linkage between Ayodhya-India & Ayutthaya-Thailand

The Cultural Linkage between Ayodhya-India & Ayutthaya-Thailand
Published by Ayodhya Research Institute
Number of Pages :16

रामायण/रामलीला

महाकाव्य संरचना : गतिशीलता, संरक्षण एवं सौन्दर्य बोध

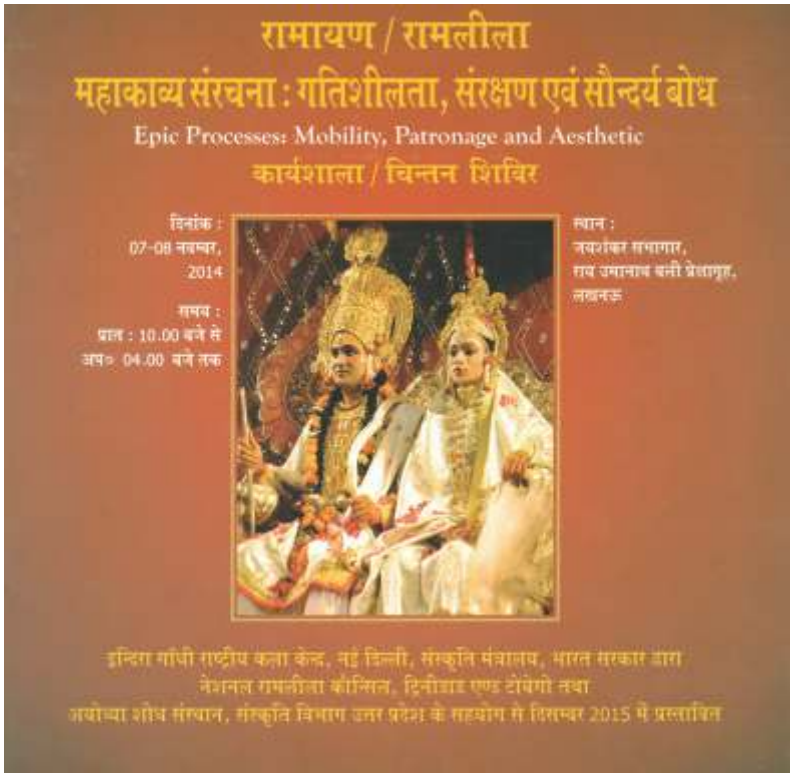

18 अगस्त, 1986 को संस्कृति विभाग के स्वायत्तशासित संगठन के रूप में अयोध्या शोध संस्थान की स्थापना की गयी। इसके मूल उद्देश्यों में अवध की लोक कला अयोध्या का सांस्कृतिक इतिहास, रामलीला, तुलसी सहित वैष्णव भक्ति आन्दोलन एवं सर्वधर्म समभाव पर कला, साहित्य एवं सांस्कृतिक दृष्टि से शोध प्रकाशन एवं प्रदर्शन निर्धारित किये गये। कार्य क्षेत्र सम्पूर्ण विश्व। मुख्य कार्यालय तुलसी स्मारक भवन अयोध्या में स्थापित है, मान्यतानुसार बाबा तुलसी ने रामचरितमानस की रचना का शुभारम्भ इस स्थल से किया था।

रामायण/रामलीला महाकाव्य संरचना : गतिशीलता, संरक्षण एवं सौन्दर्य बोध
प्रकाशक : अयोध्या शोध संस्थान

राष्ट्रीय संगोष्ठी

मानस में विज्ञान

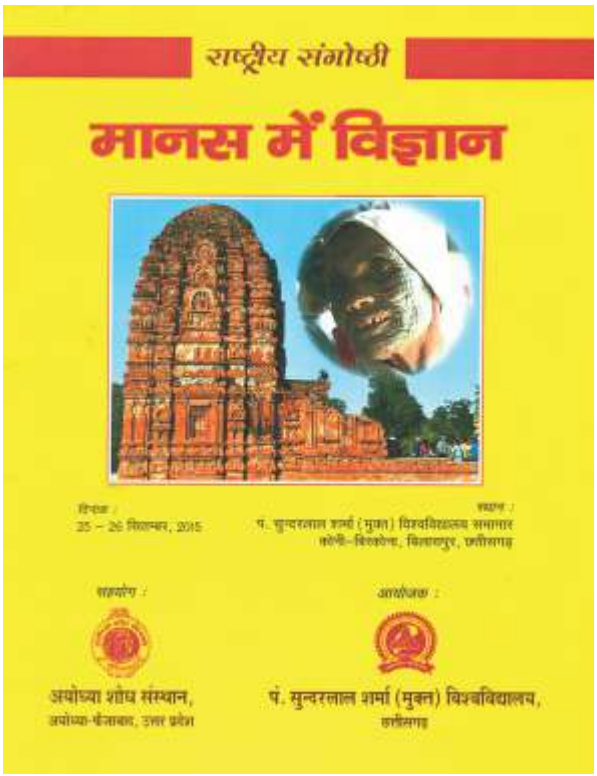

मानस में प्रकृति एवं जीव की उत्पत्ति, ऊर्जा संसार की समस्त क्रियाओं का आधार, विकासवाद व रासायनिक क्रियायें, ब्रह्म निरूपण एवं ब्रह्मकण, अनुवांशिकता के नियम, एजिंग प्रोसेस, परमाणु-समय व दूरी, पर्यावरण, शस्त्र तकनीकी, उड्डयन तकनीकी, रिमोट, सेंसर, राडार तकनीकी ब्रह्मवाणी उद्घोषणा आदि का विस्तार से वर्णन किया गया है इससे यह स्पष्ट विदित होता है कि मानस विज्ञान का न केवल भण्डार है बल्कि यह स्पष्ट परिलक्षित होता है कि वैज्ञानिक आँख के माध्यम से न केवल भक्ति ज्ञान एवं अध्यात्म को प्राप्त किया जा सकता है बल्कि यह पहुँच का सरल एवं प्रामाणिक मार्ग भी है। अतः मानस विज्ञान-भक्ति और अध्यात्म का समन्वय ग्रन्थ है। श्रीमद्भागवत महापुराण का यह उद्धरण भी इस विषय की पुष्टि करता है।

"ज्ञान विज्ञान सम्पन्नो, भज मां भक्तिभावितः"

मानस में विज्ञान
प्रकाशक : अयोध्या शोध संस्थान
प्रकाशन वर्ष : 2016

Ayodhya-Gimhae (Korea)
Cultural Relation

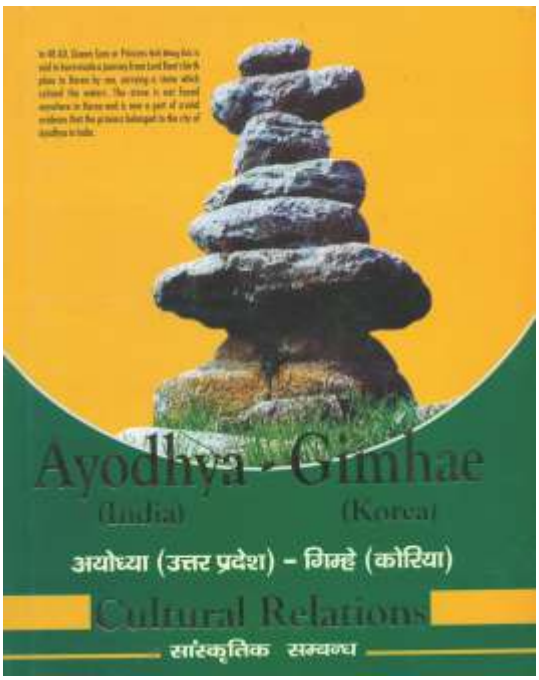

Ayodhya-Gimhae (Korea)
Cultural Relation
Number of pages : 120 pages
Size : 8.75"x11.25"
Published by : Ayodhya Research Institute
Publication Year : 2015

अयोध्या-गिम्हे : सांस्कृतिक सम्बन्ध
पृष्ठ संख्या : 120 (4 रंगों में)
साइज : 8.75" x 11.25"
प्रकाशक : अयोध्या शोध संस्थान
प्रकाशन वर्ष : 2015

अयोध्या-गिम्हे (कोरिया) सांस्कृतिक सम्बन्ध

In 48 AD, Queen Suro or Princess Huh Wang-Ock is said to have made a journey from Lord Ram's birth place to Korea by sea, carrying a stone which calmed the waters. The stone is not found anywhere in Korea and is now a part of crucial evidence that the princess belonged to the city of Ayodhya in India.

Korea has a large history of foreigners coming to it and consequently setting there. Many Korea families can trace their ancestry to Arab traders who settled in Korea during the Goryeo dynasty while other can trace their ancestors to Uhygur immigrants. One group can even trace its ancestor to a member of the imperial Ly family of Vietnam.

Korea's most famous expatriate though is Queen Huh Wang-Ock of Gaya. After King Suro had become the ruler of Geumgwan Gaya, the courtiers approached him and told him that it was regrettable that the King had no wife. They advised him to choose a beautiful and virtuous woman from his domain and make her his queen. King Suro denied their request and told them, "I was sent down from heaven to rule this land and so my spouse will also descend from heaven at divine command. Sail towards Mangsando in the south and see what happens."

रामचरितमानस स्वयं एक विज्ञान है

विश्वविद्यालय स्तरीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम हेतु

मानस में विज्ञान का आधार बहुत प्रबल है। यह आश्चर्यजनक है कि जिन वैज्ञानिक खोजों पर 19वीं, 20वीं शताब्दी में नोबेल पुरस्कार प्रदान किये गये उनके बारे में 'रामचरितमानस' में क्रमबद्ध एवं अत्यन्त सुस्पष्ट वर्णन मिलता है।

हमारा आशय वैज्ञानिकों की खोजों को दिग्भ्रमित करना नहीं है अपितु भारतीय साहित्यिक परम्परा में इस पहल को नयी पीढ़ी के समक्ष प्रामाणिक रूप में प्रस्तुत करना है कि हमारा आधार अत्यन्त सुस्पष्ट और तार्किक है। बाबा तुलसीदास ने लिखा भी है कि 'वेद पुराण उपनिषद आगम निगम' का अध्ययन कर रामचरितमानस की रचना की गयी है।

जीव विज्ञान, भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, पर्यावरण विज्ञान के विशेषज्ञ विद्वानों से वैज्ञानिक खोजों को रामचरितमानस से उद्धृत करते हुए डिप्लोमा पाठ्यक्रम बनाये गये हैं जो कि मध्य प्रदेश के भोज मुक्त विश्वविद्यालय द्वारा लागू भी कर दिये गये हैं तथा छत्तीसगढ़ के सर सुन्दर लाल शर्मा मुक्त विश्वविद्यालय में वर्तमान सत्र (2016-17) में लागू कर पाठ्यक्रम प्रकाशन की कार्यवाही की जा रही है। भविष्य में ऐसी पुस्तकें प्रकाशित कर देश और विदेश के मन्दिरों में पूजा करने वाले पुजारियों को भी उपलब्ध करायी जायेंगी जिसमें सनातन धर्म को वैज्ञानिक आधार मिल सके।

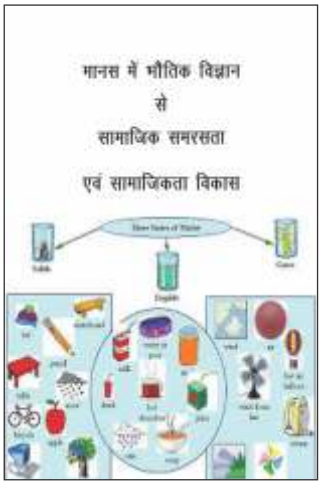

मानव जीवन एवं शरीर में पानी का असीमित महत्त्व है मानव शरीर के भार का कुल 70 प्रतिशत भाग पानी है इसीलिए मानसकार ने पदार्थ की भौतिक अवस्थाओं और उनमें ऊर्जा की गति को समझाने के लिए पानी को चुना है और पानी की तीन अवस्थाओं गैस, द्रव व ठोस की वाष्प, जल एवं बर्फ तीन रूपों में व्याख्या की है जिससे यह स्पष्ट हो सके कि निराकार एवं साकार में कोई अन्तर नहीं है। और पदार्थ तीनों अवस्थाओं में रहता है/रह सकता है। तथा जड़-चेतन, अदृश्य-दृश्य, आकार-निराकार सभी उसी एक पदार्थ के अनेक रूप है ।

सोई जल अनल अनिल संधाता। होई जलज जग जीवन दाता।।
जलु हिम उपल बिलग नहिं जैसे॥ **बाल काण्ड दोहा 115 चौपाई 3**

तथा जड़ व चेतन अवस्था को प्रारम्भिक रूप से समझाने के लिए जल व जल की धारा को प्रस्तुत किया है। जैसे स्थिर जल में स्थितिज ऊर्जा है और बहने पर जल गतिज ऊर्जा को ग्रहण कर लेता है अचर से चर बन जाता है। गतिशील हो जाता है। जड़ से चेतन हो जाता है।

गिरा अरथ जल बीच सम कहियत भिन्न-भिन्न।
बंदउँ सीता राम पद जिन्हहि परम प्रिय खिन्न॥ **बाल काण्ड दोहा 18**

जीव की उत्पत्ति को मानस में अत्यन्त सरल ढंग से भौतिक अवस्थाओं के परिप्रेक्ष्य में होने वाली रासायनिक क्रियाओं का परिणाम बताया है। जब पाँचों अवयव जल, वायु, अग्नि, पृथ्वी एवं आकाश अलग-अलग रहते हैं तब जड़ रहते है।

गगन समीर अनल जल धरनी। इन्ह कइ नाथ सहज जड़ करनी।।

लेकिन यही पांचों अवयव जब निश्चित अनुपात में मिलते हैं तो शरीर का निर्माण करते हैं।

छिति जल पावक गगन समीरा। पंच रचित अति अधम सरीरा।

जिससे यह स्पष्ट होता है कि यह ब्रह्मकण अविनाशी है जो सभी कणों जड़, चेतन, सभी चर, अचर, जीवों में पाया जाता है। और इस परिवर्तन की गति एवं दिशा की कहानी अत्यन्त सुखद है। इसीलिए समझदार ज्ञानीजन निर्गुण और सगुण में भेद नहीं करते हैं और उन्हें समान मानते हैं।

जड़ चेतन जग जीव जत सकल राममय जानि।
नाम रूप गति अकथ कहानी। समुझत सुखद न परति बखानी।।
अगुन सगुन बिच नाम सुसाखी। उभय प्रबोधक चतुर दुभाषी।।
अगुन सगुन दुइ ब्रह्म सरूपा। अकथ अगाध अनादि अनूपा।।
अगुणहि सगुणहि नहिं कछु भेदा। बारि बीच जिमि गावहिं बेदा।।
संत सरल चित जगत हित। बिनु विज्ञान कि समता आवई।।

जैसे आधुनिक विज्ञान में अजैविक कारकों को जैविक क्रियाओं का मूल एवं कारण मानते हैं, लेकिन इन दोनों के अन्तःसम्बन्ध अत्यन्त जटिल तथा अतुलनीय हैं।

रसायन, जो जीवन-लक्षणों से बने संसार निर्माण का आधार है। अभिक्रियाओं के आपस में संयोजन, पुनः विघटन व संयोजन का परिणाम है जिसे मानस में अत्यन्त सारगर्भित एवं सरल ढंग से बताया है। लिखा है कि ''बिनु जल रस कि होई संसारा'' अर्थात् जल (विलायक) के बिना घोल नहीं बनता जैसे अजैविक एवं जैविक तत्वों के मिलन के बिना संसार नहीं बनता। संसार भी विभिन्न रसों का यौगिक मिश्रण है। अर्थात् जल ही जीवन में एक मात्र विलायक है और पानी अजैविक अवयवों को अपने सहयोग एवं संयोग से जैविक मूल में परिवर्तित कर देता है तथा इन्हीं के संयोजन से जैविक संसार का निर्माण सम्भव हो पाता है और विविधता भरे संसार का मूल मंत्र भी मानस में स्पष्ट दिया है कि एक ही घटक विभिन्न परिस्थितियों में समान घटकों से रासायनिक क्रिया कर भिन्न परिणामी पदार्थ बनाते हैं। तथा अन्य पदार्थ या घटक भी अभिक्रियाओं के प्रकार व अभिक्रिया की गति को बदलते हैं।

सठ सुधरहिं सतसंगति पाई। पारस परस कुधातु सुहाई ॥
धूम कुसंगति कारिख होई। लिखिअ पुरान मंजू मति सोई ॥
ग्रह भेषज जल पवन पट पाई कुजोग सुजोग।
होहिं कुबस्तु सुबस्तु जग लखहिं सुलच्छन लोग ॥

जिससे उनके प्रभाव व परिणामों में अन्तर आता है व जीवन को प्रभावित करता है। जैसे दूध में खटाई पड़ने से उसका स्वरूप बदल जाता है और दूध में उपस्थित पानी अलग-थलग होकर दूध के गुणों को बदल देता है।

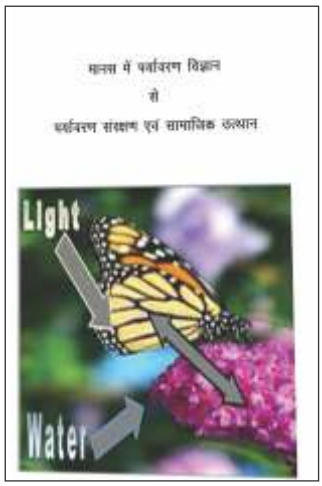

जैविक क्रियाओं के आधार पर पर्यावरण को उन्नत बनाने के लिए मानस में अप्रतिम उदाहरण प्रस्तुत हैं। जिससे सतत विकास एवं सामाजिक समरसता प्राप्त की जा सकती है ।

भीषण आक्सीकारकों की उपस्थिति मात्र से ही वातावरण जलने लगता है। शंकर का तीसरा नेत्र O_3 (ओजोन) O एवं O_2 के मिलन से बनता है। पर्यावरण में तापक्रम अनियंत्रित होने से वस्तुएँ जलने लगती हैं। जैसे वायु मण्डल में O_3की अधिकता से ग्लोबल वार्मिंग हो रही है।

तब सिवँ तीसर नयन उघारा। चितवत कामु भयउ जरि छारा ॥

मानस में वर्णित शंकर की बारात तो पर्यावरण का अनूठा जागरूकता अभियान है। जहाँ शंकरजी का शृंगार पर्यावरण का श्रेष्ठ चित्रण प्रदर्शित करता है, जिसमें सिर में गंगा (शुद्ध जल सर्वोपरि), माथे पर चन्द्रमा, पर्यावरण मित्रवत (पृथ्वी की प्राकृतिक विशालतम सोलर प्लेट), नयन तीन ($O, O_2 O_3$) साँपों का जनेऊ (एम्फीबियन एवं ट्रायफीबियन) की रक्षा आदि को शामिल किया गया है ।

ससि ललाट सुन्दर सिर गंगा। नयन तीनि उपबीत भुजंगा ॥

डॉ. लोकेन्द्र त्रिवेदी

पर्यावरण संरक्षण एवं सामाजिकता

डॉ. लोकेन्द्र त्रिवेदी

जन्म : 24 मार्च1958

शैक्षणिक योग्यता : एम.एससी., पीएच, डी. (वनस्पति शास्त्र)

व्यवसाय : सन् 1982 से म.प्र. प्रदूषण नियन्त्रण बोर्ड में सेवारत एवं वर्तमान में मुख्य रसायनज्ञ (प्रथम श्रेणी अधिकारी) के पद पर कार्यरत हैं।

नोट : उक्त पुस्तक के दो लेखक हैं–डॉ. मुकुल तिवारी एवं डॉ. लोकेन्द्र त्रिवेदी

अनुक्रमणिका

अ

अयोध्या : एक सांस्कृतिक विरासत 1
अयोध्या की संगीत परम्परा 8
अष्टमंगल-कला प्रतीक 25
अयोध्या की मूर्तिकला 26
अयोध्या की रामलीला 39
अयोध्या के कतिपय स्मरणीय महापुरुष 40
अयोध्या में जैन-परम्परा : उद्‌भव और विकास 41
अयोध्या के मन्दिरों में दुर्लभ भित्तिचित्र 81
अवध प्रदेश का सामाजिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन 85
अयोध्या केन्द्रित रामभक्ति धारा का संगीत पक्ष 96
अवध में श्रीराम भक्ति आन्दोलन का विकास 98
अयोध्या एवं निकटवर्ती क्षेत्रों में लोकनाट्य नकटौरा 103
अपराजिता 106
अयोध्या-गिम्हे (कोरिया) सांस्कृतिक सम्बन्ध 112
अयोध्या 71

आ

आनन्दरामायण का सांस्कृतिक परिशीलन 68
आंजनेय 83

इ

इक्यावन-शक्तिपीठ 97
इतिहास एवं पुरातत्व में अयोध्या का कनक भवन 105

ए

एक बँसुरीः एक बाँस 48

क

कोंसल का इतिहास एवं संस्कृति 3
कोंच की रामलीला 66
काशी की रामलीला : एक एल्बम 74
काशी से प्राप्त चित्रित पाण्डुलिपियाँ 84

ख

खबरें खुद बोलती हैं ... रघुनाथ गाथा-1 30
खबरें खुद बोलती हैं ... रघुनाथ गाथा-2 31

ग

गोस्वामी तुलसीदास की जीवनगाथा 34
गोस्वामी तुलसीदासकृत श्रीरामचरितमानस 35

घ

घट रामायण 32

छ

छतीसगढ़ के लोकजीवन में राम 27

ज

जंगनामा 49
जहँ जहँ चरण पड़े रघुवर के 87
जसवन्तनगर, इटावा की मैदानी रामलीला 104

त

तुलसी-दल 38
तुलसी की अन्तर्दृष्टि 53
तुलसी-जन्मभूमि 61
तुलसी-काव्य में साहित्यिक अप्रभिप्राय 73
तुलसी के हनुमान 95

द

देश की पारम्परिक लोकचित्र शैलियों में रामकथा 7
The other Locnkow 89
The Cultural Linkage between Ayodhya - India & Ayutthaya-Thailand 109

न

नैमिषारण्य 70

प

प्रयाग की रामलीला 5
Perspective of the Ramayan in India and Southeast Asia 24
पौलस्त्य वध का इतिहास 80
प्राचीन अयोध्या का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन 88

फ

फैजाबाद : सांस्कृतिक गजेटियर 91

भ

भारतीय भाषाओं में रामकथा 2
भारतीय संस्कृति में गज 11
भारतीय भाषाओं में रामकथा : अवधी भाषा 15
भारतीय भाषाओं में रामकथा : पहाड़ी भाषा 16
भारतीय भाषाओं में रामकथा : बांग्ला भाषा 17
भारतीय भाषाओं में रामकथा : कन्नड़ भाषा 18

भारतीय भाषाओं में रामकथा : गुजराती भाषा 19
भारतीय भाषाओं में रामकथा : राजस्थानी भाषा 20
भारतीय भाषाओं में रामकथा : आरण्यक, बुन्देली, तमिल, बांग्ला (मूल) 21
भारतीय संस्कृति के परिशीलन में रामचरितमानस 75
भुशुण्डिरामायण का समाज दर्शन 79

म

मानस-स्वास्थ्य 37
मानस में प्रकृति विषयक सन्दर्भ 52
मैसूर में स्थित महत्त्वपूर्ण श्रीराम और श्रीहनुमान मन्दिर : एक परिक्रमा 65
मानस के मनोहर प्रसंग 67
मानस के कथा-प्रसंग 107
महाबीर श्री हनुमान जी 72
मध्ययुगीन उत्तर भारत में रामकथा चित्रावली 99
मानस में विज्ञान 111

र

Ramlila : Varied Perspective 6
Ramlila in Indian Languages 9
राम : कला सन्दर्भ 10
Ramcharitmanas Ocean of Science 12
रामकथा : वैश्विक सन्दर्भ 22
राम साहित्य कोश-1 (अ से य) 28
राम साहित्य कोश-2 (र से ह) 29
रामचरितमानस के रचनाशिल्प का विश्लेषण 36
रामायण तथा पौराणिक साहित्य में हनुमान 42
रामचरितमानस में व्यक्त संस्कृति 45
Ramkatha in Awadhi Folkbre 47
रामार्णव : द्वितीय खण्ड (अयोध्याकाण्ड) 59
रामार्णव : तृतीय खण्ड (अरण्य, किष्किन्दा एवं सुन्दरकाण्ड) 60
राम-रंग-रस भींजी चुनरिया 63
रामचरितमानस में तुलसी की नैतिक मान्यताएँ 76
रामचरितमानस में प्रक्षेप 78
रामायण कालीन राज्यादर्श 82
Ramayana according to Devi Purana 86
रामायण (विनय-खण्ड) 90
'रामचरितमानस' की लोकप्रियता का विवेचनात्मक अध्ययन 93
रामप्रियाशरण कृत सीतायन : एक अध्ययन 94
रामाज्ञ प्रश्न 100
Raghuveera: A Global Journey of Ramayana 108
रामायण/रामलीला 110
रामचरितमानस स्वयं एक विज्ञान है 113

ल

लोक राम-कथा 4
लीला और भक्तिरस 33
लोकपर्व 69

व

वाल्मीकि रामायण के पात्र-1 43
वाल्मीकि रामायण के पात्र-2 44
वाल्मीकि की पर्यावरण चेतना-1 54
वाल्मीकि रामायण के चयनित शत श्लोकों का हिन्दी-पद्य रूपान्तर 101
वन्देविशुद्धविज्ञानौ रामचरितमानस 50
वृषभान विनोद 64
वैदिक समाज 102

श

श्री लीला रामायण 13
श्रीरामचरितमानस की वैज्ञानिक टीका 14
श्री रामनगर रामलीला 23
श्रीमत्संग्रह पदावली 62

स

सीता सुरुजवा क ज्योति 46
Scientific Aspects in Ramcharitmanas 51
समकालीन हिन्दी साहित्य की चुनौतियाँ 55
साहित्य, समाज तथा संस्कृति के समकालीन प्रश्न 56

ह

हनुमदुपासना की तान्त्रिक पृष्ठभूमि 57
हरदोई : सांस्कृतिक गजेटियर 92
हिन्दी राम-काव्य में हनुमान के चरित्र का स्वरूप 58
होरी रहस 77